साहित्य अकादेमी

4 सितंबर 2014

लेखक से भेंट

प्रभाकर नारायण कवठेकर

महामहोपाध्याय प्रो. प्रभाकर नारायण कवठेकर का जन्म 19 सितंबर 1923 को इंदौर में हुआ। 1934 से उन्होंने संस्कृत का परंपरागत तथा आधुनिक ढंग से अध्ययन किया और एम.ए. पी-एच.डी., साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ और साहित्य रत्न की उपाधियाँ प्राप्त की। आपने संगीत की भी दो परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। आपने 1942 में महात्मा गाँधी के आह्वान पर 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लिया और तत्कालीन होल्कर राज्य के ब्रिटिश आई.जी. मि. हार्टन के क्रोध और प्रताड़ना का सामना किया।

1954 में आप शासकीय हमीदिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल में प्राध्यापक तथा अध्यक्ष बने। आपने कई शासकीय महाविद्यालयों में संस्कृत के आचार्य के रूप में कार्य किया। आप शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, इंदौर में प्राचार्य रहे। 1978 में आपको विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में नियुक्त किया गया। 1982 में आपने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में काम सँभाला। 1983 में संस्कृत अनुदान समिति के अध्यक्ष का पदभार आपको सौंपा गया। केंद्रीय संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में आपके प्रस्तावों के आधार पर लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति तथा वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त आपने मुंबई, लखनऊ, जयपुर, कोलाकाता आदि में विद्यापीठ स्थापना के लिए मार्गदर्शन किया।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत संस्थाओं के लिए गठित स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष के रूप में आपकी पहल पर भारत सरकार द्वारा वैदिक संशोधन मंडल, पुणे और कुप्पु स्वामी संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूट, चेन्नई को भारत सरकार द्वारा अधिगृहीत किया गया।

देश की तमाम, महत्त्वपूर्ण संस्थाओं से आप सक्रिय रूप से जुड़े रहे और आपकी विशेषज्ञता का लाभ उनको मिला। भारत सरकार के संस्कृत शब्दकोश प्रकल्प की जाँच समिति के आप अध्यक्ष रहे। भारतीय विद्या भवन के संस्कृत म.वि. प्रबंध समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। विशेषज्ञ के रूप में भी आप विभिन्न

उदयगिरि तथा खण्डगिरि, (भुवनेश्वर) गुफाओं के सामने

विश्वविद्यालयों, लोकसेवा आयोगों आदि के चयन समिति में रहे।

महामहोपाध्याय प्र.ना. कवठेकर की लगभग दो दर्जन कृतियाँ प्रकाशित हैं। आप संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिंदी और मराठी में लेखन कार्य करते हैं। प्रकाशित कृतियों में कविता-संग्रह, कहानी-संग्रह, बाल-कृतियाँ, शोधपरक कृतियाँ, व्याकरण ग्रंथ, संपादित कृतियाँ एवं अनुवाद शामिल हैं। आपके लगभग 100 शोध-आलेख प्रकाशित हैं। आपने संस्कृत, मराठी तथा हिंदी में कविताएँ लिखी हैं। आपकी संस्कृत कविता 'विमान बाला' देश-विदेश में चर्चित रही। इसे वायस ऑफ़ अमेरिका तथा बुखारेस्ट, फिलाडेल्फिया रेडियो से प्रसारित किया गया।

कवठेकर जी को कई विदेशी विश्वविद्यालयों, केंद्रों आदि में व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया और उन्हें वहाँ सम्मानित भी किया गया। इन देशों में फ्रांस, अमेरिका, कनाडा, वियना, आस्ट्रेलिया आदि शामिल हैं। आप इन देशों में आयोजित विश्व संस्कृत सम्मेलनों में विशिष्ट अतिथि के रूप में सहभागी रहे। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा आपको प्रतिनिधि के रूप में बुखारेस्ट तथा जकार्ता में राजनयिक के रूप में भेजा गया और इसके लिए आपको यश भी मिला।

वर्तमान में भी आप कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं, आप अहल्या कामधेनु विश्वविद्यालय, इंदौर के मानद अतिथि आचार्य हैं। वेद प्रतिष्ठानम् इंदौर के अध्यक्ष का पद भी आप सँभाल रहे हैं। अपनी रचनाधर्मिता और विद्वत्ता के लिए आपको विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा मिली है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, चर्चा समूहों, कवि सम्मेलनों में आपकी सहभागिता रही है। राष्ट्रमंडल कुलपति सम्मेलन में भारत का आपने प्रतिनिधित्व किया।

तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह से 'राष्ट्रपति पुरस्कार' सम्मान ग्रहण करते हुए 1986

अपनी सर्जनात्मक एवं समालोचकीय प्रतिभा के लिए आपको अनेकानेक पुरस्कार-सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनमें शामिल हैं संस्कृत पांडित्य के लिए महाराष्ट्र शासन का विशिष्ट सम्मान, संस्कृत में योगदान के लिए उ.प्र. शासन का सम्मान आदि।

केंद्रीय संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में सभा को संबोधित करते हुए 1984

तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी से सम्मान प्राप्त करते हुए

अहमदाबाद, भुवनेश्वर, दिल्ली, उज्जैन, भोपाल, इंदौर, पुणे, आदि नगरों में स्थित विविध संस्थाओं द्वारा आपका अभिनंदन एवं सम्मान किया गया। भारत के राष्ट्रपति द्वारा 1986 में आपको लब्ध-प्रतिष्ठ संस्कृत विद्वान के नाते सम्मानित किया गया।

वैदिक सहित्य पर आपके शोध आलेख एवं आपकी संस्कृत कृतियों की सराहना डॉ. ए.एल. बाथम, डॉ. नार्मन ब्राउन, डॉ. खोंडा, डॉ. स्टेनबाख जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने की है। एक संस्कृत कवि के रूप में भी आप चर्चित रहे हैं, जिसने आधुनिक विषयों को लेकर कविताएँ लिखीं और *बाजीराव मस्तानीयम्* जैसा महाकाव्य लिखा।

संक्षिप्त जीवनवृत्त

1923	:	19 सितंबर को इंदौर में जन्म
1934	:	संस्कृत का परंपरागत अध्ययन
1942	:	स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता
1944	:	काव्यतीर्थ (कलकत्ता)
1952	:	एम.ए. (संस्कृत), आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
1954	:	साहित्याचार्य, मध्यमा प्रथम श्रेणी, शास्त्री प्रथम श्रेणी, वाराणसी
	:	साहित्य रत्न, प्रयाग
	:	एम.ए. (हिंदी), आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
1955	:	*ध्वनिकथा* (मराठी) का प्रकाशन
1956	:	अध्यक्ष, लोकमान्य तिलक स्मृति पुस्तकालय, तालुका जबलपुर
1958	:	पी-एच.डी. (संस्कृत), आगरा विश्वविद्यालय
1959	:	प्राध्यापक तथा अध्यक्ष, शासकीय हमीदिया। स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल
1962	:	अध्यक्ष, मराठी साहित्य संगम भोपाल
	:	एम.पी-ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, भोपाल के संस्थापक सचिव
1963	:	प्रधान संपादक : द *मालविका* रिसर्च जर्नल ऑफ़ द इंडोलाजी
1963	:	*व्याकरण दीपिका* (संस्कृत) का प्रकाशन
1969	:	*मेखला* (मराठी) का प्रकाशन
1969	:	*नीतिकथा* (संस्कृत) का प्रकाशन
1969	:	आखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन, भोपाल के कार्यकारी अध्यक्ष।
1970-78	:	शासकीय संस्कृत महाविद्यालय इंदौर में प्राचार्य
1976-77	:	गवर्नमेंट म्यूजिक कॉलेज, इंदौर में प्राचार्य
1978	:	कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
1982-84	:	केंद्रीय संस्कृत बोर्ड, मानव

एक पुरस्कार समारोह में सम्मान ग्रहण करते हुए

संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सदस्य

1983 : अध्यक्ष, संस्कृत अनुदान समिति

1984-87: वैदिक संशोधन मंडल, पुणे के अध्यक्ष

1986 : राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत विद्वान के रूप में सम्मानित

1990 : विश्व संस्कृत सम्मेलन, वियना में मुख्य अतिथि

: रोमानिया सरकार के साथ राजनायिक कार्य के लिए विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रोमानिया में प्रतिनियुक्ति

1992 : अखिल भारतीय वेद महोत्सव इंदौर, के राष्ट्रीय अध्यक्ष

1993 : आल इंडिया ओरिएंटल कांफ्रेंस, पुणे के राष्ट्रीय अध्यक्ष

1994 : विश्व संस्कृत सम्मेलन, अमेरिका में मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता

: विश्व संस्कृत सम्मेलन मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में सहभागिता

: जकार्ता (इंडोनेशिया की यात्रा)

1997 : राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा 'महामहोपाध्याय' की उपाधि से विभूषित

: मराठी समाज, इंदौर तथा महाराष्ट्र साहित्य सभा, इंदौर द्वारा सम्मानित

2000 : मराठी साहित्य सम्मेलन, इंदौर द्वारा सम्मानित

2001 : जगदगुरु शंकराचार्य, शृंगेरी द्वारा कोलकाता में सम्मानित

महामहोपाध्याय की उपाधि प्राप्त करने के बाद तत्कालीन राष्ट्रपति के.आर. नारायणन के साथ 1988

अपने परिवार के साथ विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में 1980

2001 : महाराष्ट्र शासन द्वारा संस्कृत पांडित्य के लिए विशिष्ट सम्मान

: संस्कृत योगदान के लिए उ.प्र. सरकार का सम्मान

संक्षिप्त ग्रंथ-सूची

संस्कृत

काव्य

भूलोक-विलोकनम् (खंडकाव्य) 2000

बाजीराव-मस्तानीयम् (ऐतिहासिक खंडकाव्य) 2005

बालानां सुखबोधाय (बालकाव्य) 2005

व्याकरण ग्रंथ

संस्कृत व्याकरण दीपिका 1963

संपादित

चमत्कार-चंद्रिका (दुर्लभ संस्कृत पांडुलिपि) 2004

विद्याशतकम् (जैनकृति) 2005

मालविका (त्रैमासिक संस्कृत पत्रिका) 1972

अंग्रेज़ी

बिल्हण (साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित विनिबंध) 1996

कालिदास : द मैन एंड द माइंड 1999

विजडम दैट वाज इंडिया (शोधकार्य)

हिंदी

संस्कृत साहित्य में नीतिकथा (शोध), चौखंबा प्रकाशन 1969

वैदिक आख्यान 1995

कालिदास : व्यक्ति तथा अभिव्यक्ति 2009

सांख्य तथा वेदांत (कोलकाता में आयोजित व्याख्यान) 2002

मराठी

ध्वनिकथा (शोध प्रबंध) 1955

मेखला (कहानी-संग्रह) 1969

मधुपर्क (मौलिक काव्यकृति) 1972

अनुवाद

नर्मदा मैया 1994

जगद्गुरु शंकराचार्य, शृंगेरी द्वारा प्रकाशित